Divine love as the standard of morality.

दिव्य प्रेम का समस्त सृष्टि में कोई प्रतिरूप नहीं है, तथा यह केवल परमपिता परमेश्वर से आता है।
दिव्य प्रेम केवल मनुष्य के लिए ईश्वर का प्रेम नहीं है। न ही यह ईश्वर द्वारा किसी तरह से शुद्ध किया गया मानवीय प्रेम है, जिसे दिव्य प्रेम कहा जा सके।
दिव्य प्रेम वास्तव में ईश्वर के समस्त ब्रह्मांड में सबसे महान है।

भारतीय दर्शन में दिव्य प्रेम या दैवीय प्रेम को ईश्वरवाद से बताया गया है। विशिष्टाद्वैत वेदान्त के अनुसार — ईश्वर पुरुषोत्तम है। वह अनन्त कल्याण-गुणों से युक्त और सारे अशुभ गुणों से मुक्त है। उनके अलावा कोई सर्वोच्च तत्व नहीं है। वह सत्य, ज्ञान और आनंद से युक्त है। वह नित्य और अपरिणामी है। वह स्वयंप्रकाश है, पर-प्रकाश्य नहीं है। वह सर्वगुणसम्पन्न सत्य है।

ईश्वर विग्रह धारण करता है। उनका विग्रह उनके स्वरूप की तरह नित्य और शुद्धसत्व से बना है। उनका चेतन शरीर उनके ज्ञानमय स्वरूप को आवृत नहीं करता। वह उनके दिव्यस्वरूप को प्रकट करता है। वह परम प्रकाशमय है और कारुण्य तथा अन्य कल्याण गुणों से युक्त है। वह योगियों के परम ध्यान का विषय है, सारे संसार को मुग्ध करने वाला है, विषय-सुखों से वैराग्य पैदा करनेवाला है, सब क्लेशों को नष्ट करनेवाला है, सबका रक्षक है और सबका कारण है। मुक्त जीव उसे देखते हैं।

~~ईश्वर का स्वरूप पंचविध है - परमूर्ति~~

ईश्वर जगत की सृष्टि, पालन और संहार के लिए, बंधन में पड़े हुए जीवों की रक्षा के लिए और भक्तों पर अनुग्रह करने के लिए समय-समय पर इस धरती पर अवतरित होता है। ईश्वर चेतन जीवों और जड़ पदार्थों के अंदर प्रवेश करके उनको नियमित करता है। मूर्ति इत्यादि उपास्य चीज़ों के अंदर ईश्वर का रहना अत्यावश्यक है। इससे ईश्वर के प्रति अनुराग होता है।

अवतार भक्तों का कल्याण करता है और सबका शरण है। स्थूल मूर्ति अवतार है, जिसके माध्यम से ईश्वर की आराधना की जा सकती है।

अद्वैत वेदान्त के अनुसार — ईश्वर सविशेष ब्रह्म है। वह निरुपाधि, निर्विशे और निर्गुण ब्रह्म से भिन्न है। वह सगुण है। वह माया से उपहित ब्रह्म है। यद्यपि ब्रह्म निर्गुण है तथापि उपासना के लिए उसे सगुण कहा गया है। उसके अंदर शासक और शासित का भेद नहीं है। वह जगत् का सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् कर्ता, पालक और हर्ता अविद्यात्मक नाम-रूप-बीज के फैलने की दृष्टि से है।

भारतीय दर्शन में दैवीय प्रेम का तात्पर्य ईश्वर के प्रति प्रेम से है यहाँ हम उदाहरण लेंगे श्री राम से तुलसीदास के प्रेम का, मीरा के लिए कृष्ण के प्रेम का और सुरदास के लिए कृष्ण के प्रेम का।